मूल्य - 5 रुपये

ढलती उम्र के एकाकीपन में किसी के कन्धे का सहारा....
.....खुशियों की अपार अनुभूति देता है।

आशीर्वाद -
डॉ. कैलाश 'मानव'
संस्थापक एवं प्रबन्ध न्यासी,
नारायण सेवा संस्थान (ट्रस्ट), उदयपुर

मुख्य संरक्षक तारा संस्थान -
श्री एन.पी. भार्गव
उद्योगपति एवं समाज सेवी, दिल्ली

तारांशु

मासिक

अक्टूबर, 2012
वर्ष 1, अंक 3, पृ.सं. 20 संपादक :- कल्पना गोयल

आलोक की ओर आश्वस्त कदम

'तारा संस्थान' द्वारा हिसार (हरियाणा) में आयोजित
मोतियाबिन्द जाँच शिविर में चयनित रोगी बन्धु सफल
मोतियाबिन्द ऑपरेशन के बाद..... अपने परिजनों के साथ.

तारांशु - वर्ष 1, अंक - 3, अक्टूबर, 2012

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
शिविर में चयनित रोगियों के सफल मोतियाबिन्द ऑपरेशन	02
अनुक्रमणिका	03
सद्भावना सुख	04
तृप्ति योजना	05
सेवा - धर्मिता के अनुपम उदाहरण	06
आनन्द वृद्धाश्रम	07-08
एक कोशिश... जिन्दगी की...	09
गौरी सेवा	10
मोतियाबिन्द चिकित्सा	11-13
शिविर सौजन्य	14
अस्मिता	15
तारा नेत्रालय में मशीनों उपकरणों हेतु सहयोग का निवेदन	16
Contact Tara	17
Grateful to the Donors	18
Events and Occosions	19

मेरा आशीर्वाद...

प्रभु - सेवा संकल्प 'तारा संस्थान' को मेरा आशीर्वाद....

मेरी सुपुत्री श्रीमती कल्पना गोयल को पीड़ित मानवता की सेवा के संस्कार जन्म से ही मिले हैं। मैं अपनी नौकरी के साथ - साथ नारायण सेवा के कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहता था, तो कल्पना जी एक-एक मुट्ठी आटा संग्रह का कार्य बड़ी जिम्मेदारी से करती थीं और अपनी माताजी आदरणीया श्रीमती कमला जी को बीमार लोगों के परिचारकों के लिए खाना बनाने में सहयोग करती थीं। महज 12-13 वर्ष की उम्र में ही पीड़ितों की सेवा के लिए कल्पना जी का उत्साह और समर्पणभाव प्रेरणादायक था। आपने 'तारा संस्थान' की स्थापना करके अल्प समय में ही मोतियाबिन्द के ऑपरेशन हेतु 'तारा नेत्रालय' का शुभारंभ, गरीब विधवाओं को आर्थिक सहायता, असहाय बुजुर्गों के लिए खाद्य-सामग्री सहायता, और आनन्द वृद्धाश्रम... एक से एक बढ़कर अनुकरणीय सेवा कार्य...। श्रीमती कल्पना जी मेरी भावनाओं के सर्वथा अनुरूप सेवा-कार्य करके पीड़ित बन्धुओं को निःशुल्क सहायता उपलब्ध करवा रही है। मैं सभी सेवाधर्मी महानुभावों, उदार दानदाताओं से अनुरोध करता हूँ कि वे मुक्तहस्त होकर 'तारा' के सेवा प्रकल्पों में सहयोग करें और सेवा के इस प्रभु-कार्य में सहभागिता का पुण्य प्राप्त करें।

डॉ. कैलाश 'मानव'
(पद्मश्री अलंकृत)
मैनेजिंग ट्रस्टी एवं संस्थापक, नारायण सेवा संस्थान (ट्रस्ट), उदयपुर

तारांशु मासिक, अक्टूबर, 2012
'तारांशु' - स्वत्वाधिकारी, श्रीमती कल्पना गोयल द्वारा 240-ए, हिरण मगरी, सेक्टर - 6, उदयपुर, राजस्थान से प्रकाशित तथा मुद्रक श्री विजय अरोड़ा द्वारा न्यूट्रेक ऑफसेट मुद्रणालय, 13, न्यूट्रेक नगर, सेक्टर - 3, हिरण मगरी, उदयपुर में मुद्रित, सम्पादक - श्रीमती कल्पना गोयल

सम्पादकीय

सद्भावना सुख...

जीवन में सुख भी है, और दु:ख भी। सभी सुख चाहते हैं, मनुष्य, पशु, पक्षी सहित सभी प्राणी। दु:ख कोई नहीं चाहता, दु:ख में पीड़ा है, कष्ट है, सभी प्रकार की अप्रिय और अनभिमत वेदनाएँ हैं। अत: हम सभी सतत सुख की कामना ही करते हैं। सुख भी कई प्रकार के हैं, कई रूपों में हैं। कुछ सुख हमें अनायास ही उपलब्ध हो जाते हैं, कुछ सुख प्रयास करने पर प्राप्त होते हैं। पर, कुछ सुख ऐसे भी हैं, जिन्हें अनुभव करने के लिए हमें कल्पनाओं का सहारा लेना पड़ता है। मुझे कुछ इस तरह के शान्ति, प्रसन्नता, प्रीति और उल्लासकारक सुखों की अनुभूति है, जो कल्पनीय हैं। कल्पना करके उन सुखों को आप भी अनुभव कर सकते हैं। प्रयास, परीक्षण, प्रयोग करके देखें, परिणाम अवश्य ही अत्यन्त सुखदायक होगा।

मैं जिस सुख की ओर संकेत करना चाह रही हूँ, वह है 'सद्भावना का सुख'। अपनी सद्भावना दूसरों के लिए हों, तो परिणाम - स्वरूप दूसरों की सद्भावनाएँ हमें अनायास ही मिल जाती हैं। नि:स्वार्थ और निष्प्रयोजन, न कोई अभिमान, न ही कोई अहंकार। जिस तरह सन्त-महात्माओं, बुजुर्ग - गुरुजनों के आशीर्वाद से हमारे संकल्प सिद्ध होते हैं, अमंगल का निवारण होता है, उसी तरह सद्भावनाओं से हमें भावनात्मक प्रीति और मानसिक शान्ति प्राप्त होती है, अशुभ का निवारण भी। जो हमारे प्रति हृदय से सद्भावना प्रकट करते हैं, उनकी अपनी कृतज्ञता और आनन्द तो वर्णनातीत है।

'तारा संस्थान' के आनन्द वृद्धाश्रम में एकाकी, असहाय और अपनों से तिरस्कृत, परित्यक्त बुजुर्ग महिला-पुरुष आवास कर रहे हैं। मुझे प्रतिदिन कुछ समय उनके साथ बिताने का सौभाग्य मिल जाता है। उनके साथ हमारा कोई पूर्व-परिचय या रिश्ता-नाता नहीं है, तथापि, उनके साथ सद्भावना, सहानुभूति और विश्वास का जो सम्बन्ध बन रहा है, वह मन और भावों को गद्-गद् कर देने वाला है। यहाँ उपलब्ध हो रही सेवा-सुश्रूषा, सम्मान और आत्मीय व्यवहार से उत्पन्न होने वाली उनकी सद्भावना की तरंगे हमें जीवन के सर्वथा नये सत्य और नये अर्थ से परिचित करवा रही है।

ऐसे ही अनुभव 'तारा' से प्रतिमाह नकद सहायता राशि प्राप्त करने वाली असहाय विधवा महिलाओं की - लगभग शून्यता में खो चुकी, आँखों की चमक में, खाद्य-सामग्री सहायता से आश्वस्त झुर्रियों वाले बुजुर्ग चेहरों में, या मोतियाबिन्द - ऑपरेशन के बाद पुन: प्राप्त दृष्टि वाली आह्लादभरी आँखों से सतत मिल रहे हैं। निश्चय ही, जिसे आप जानते भी नहीं, कोई सम्बन्ध या परिचय भी नहीं, फिर भी यदि आपको कष्ट और पीड़ा से मुक्ति दिलाने वाली किसी अकल्पित स्रोत से सहायता मिल जाए, तो आपका मन, आपके भाव उस स्रोत के प्रति अकल्पनीय सद्भावना से भर जाएँगे।

आप 'तारा संस्थान' के वृद्धाश्रम में कभी भी पधार कर इस अकल्पनीय सद्भावना के कल्पनीय सत्य का साक्षात् कर सकते हैं - कि सेवा और सद्भावना से क्या संभव नहीं है ?

कल्पना गोयल
संस्थापक एवम् अध्यक्ष

तृप्ति योजना में असहाय बन्धुओं को खाद्य - सामग्री सहायता

'तृप्ति योजना' में ऐसे असहाय वृद्ध महिला पुरुषों को खाद्य-सामग्री प्रतिमाह उनके घर तक पहुँचाई जा रही हैं, जो गरीबी और बुढ़ापे के कारण अपना दो - समय का भरपेट भोजन भी नहीं जुटा पा रहे हैं। दान-दाताओं के सौजन्य से 'तारा संस्थान' इन बुजुर्गों को भूख की पीड़ा से राहत देने का सेवा - कार्य कर रहा है।

इस बार आपका परिचय आसाराम कॉलोनी, उदयपुर निवासी 45 वर्षीया असहाय बन्धु श्री मुरली छाबड़ा से करवा रहे हैं, जिन्हें तृप्ति योजना के अन्तर्गत प्रतिमाह उन तक खाद्य-सामग्री पहुँचाई जा रही है। श्री मुरली की जीवन - व्यथा जानकर आपका हृदय भी द्रवित हो जायेगा। श्री मुरली की एक आँख बचपन से ही खराब थी। दूसरी आँख से भी कम दिखाई देता था। आँख की ज्योति बढ़ने की उम्मीद में 15 वर्ष पूर्व ऑपरेशन करवाया, पर कोई लाभ नहीं हुआ और दिखाई देना बिल्कुल बन्द हो गया। दोनों आँखों की ज्योति खो चुके मुरली छाबड़ा असहाय हो गये। विवाह भी नहीं हो सका। भाई-भाभी ने सहारा दिया, पर उनकी आर्थिक स्थिति भी कमजोर होने के कारण गुजर - बसर करना दिन-दिन कठिन होने लगा और श्री मुरली असहाय स्थिति में घुटते रहे। एक तो पूरी तरह दृष्टि हीन, और ऊपर से अपने भाई-भाभी पर भार बने हुए। हर समय अपनी असमर्थता और गरीबी का दंश झेलते हुए ये हताशा के कगार तक पहुँच गये। 'तारा संस्थान' को जब इनकी इस हालत का पता लगा तो इन्हें 'तृप्ति योजना' में सम्मिलित करके इन्हें प्रतिमाह इनके घर पर खाद्य - सामग्री सहायता उपलब्ध करवाई जाने लगी। अब श्री मुरली छाबड़ा भूख की पीड़ा से मुक्त हैं।

'तृप्ति योजना' के अन्तर्गत प्रत्येक बुजुर्ग को निम्नानुसार मात्रा में 1500/- मूल्य की खाद्य-सामग्री सहायता प्रतिमाह वितरित की जा रही है।

आटा - 10 कि.ग्रा., चावल - 2 कि.ग्रा., दालें - 1.5 कि.ग्रा., खाद्य तेल - 1 कि.ग्रा., शक्कर - 1.5 कि.ग्रा., मसाले (धनिया, मिर्च, हल्दी) - 500 ग्रा., नमक - 1 कि.ग्रा., साबून - 2, नकद राशि - रु. 300 (शाक - सब्जी के लिए)
खाद्य - सहायता व्यय - रु.1500 प्रति व्यक्ति, प्रतिमाह

वर्तमान में तृप्ति योजना के अन्तर्गत 250 बुजुर्ग बन्धुओं को प्रतिमाह उपर्युक्त मात्रानुसार खाद्य सामग्री पहुँचाई जा रही हैं। आपके सहयोग सौजन्य से यह संख्या 500 करने का लक्ष्य है।

आपसे प्रार्थित खाद्य-सामग्री सहयोग-सौजन्य राशि
रु. 4500 (3 माह), रु. 9000 (6 माह), रु. 18000 (एक वर्ष)

सेवा - धर्मिता के अनुपम उदाहरण - श्री नगेन्द्र प्रसाद भार्गव

'तारा संस्थान' के संरक्षक दिल्ली निवासी श्री नगेन्द्र प्रसाद भार्गव बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। निर्धन और असहाय बन्धुओं के कल्याण हेतु आप द्वारा विविध - क्षेत्रों में दिये गये सहयोग - सौजन्य से आपकी करुणाशीलता और संवेदनशीलता का सहज ही अनुमान हो जाता है। गुणवत्तापरक खाद्य-पेय पदार्थों के निर्माण में आपने इंग्लैण्ड से विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया है। 79 वर्षीय श्री भार्गव सा. का सम्बन्ध कृषि आधारित परिवार से रहा है, और आप विगत 5 दशकों से भी अधिक समय से कृषि आधारित उद्योग से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं तथा दिल्ली स्थित 'मिड लैण्ड फ्रूट एण्ड वेजीटेबल प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड' में विशिष्ट अनुसंधान और विकास प्रायोजना में (R&D) मार्गदर्शन और नेतृत्व करते हुए 'खाद्य एवं फल उत्पाद प्रसंस्करण' में आम्र-सार के निर्माण से आपने विश्व व्यापी ख्याति अर्जित की है। अपनी योग्यता और क्षमता के बल पर अधुनातन तकनीकों का प्रयोग करते हुए खाद्य-पदार्थ-प्रसंस्करण उद्योग में कान्तिकारी पहल करते हुए प्रसंस्कृत खाद्य - पेय पदार्थों के निर्यात में वृद्धि के लिए आपका नाम सदैव अग्रणी है। युद्ध-काल में आपने देश के योद्धाओं के लिए गुणवत्ता परक खाद्य-पेय पदार्थों की आपूर्ति सुनिश्चित करके अपनी राष्ट्रभक्ति की अनूठी मिसाल पेश की है। निर्धन असहाय पीड़ित और जरूरतमन्द बन्धुओं के हितार्थ तन-मन-धन से निःस्वार्थ सेवा में श्री नगेन्द्र प्रसाद भार्गव ने कीर्तिभाव स्थापित किये हैं। इनमें प्रमुख हैं -

❒ अजमेर स्थित सुप्रसिद्ध सेवा मन्दिर प्रतिष्ठान की देख-रेख में संचालित अधुनातन उपकरणों से सम्पन्न 'आई केयर यूनिट' का निर्माण एवं समर्पण, जहाँ विपन्न रोगियों के नेत्रों की जाँच एवं मोतियाबिन्द ऑपरेशन निःशुल्क किये जाते हैं। ❒ शारीरिक रूप से अक्षम पोलियोग्रस्त विकलांगों के निःशुल्क ऑपरेशन के लिए 'शिखर भार्गव हॉस्पीटल' का उदयपुर में निर्माण, जो नारायण सेवा संस्थान के प्रबन्धन में आपके नाम और कुल का यशोगान कर रहा है। ❒ अलवर जिले के शिवनगर गाँव में वर्षाजल संग्रहण हेतु एक बाँध का निर्माण, जो पेयजल की उपलब्धता व सिंचाई में सहायक सिद्ध हो रहा है। ❒ नेत्र रोगों की निःशुल्क चिकित्सा में रत सुप्रसिद्ध 'महावीर इन्टरनेशनल' स्वयंसेवी संस्थान को 'भ्रमणशील चिकित्सा - राहत वाहन का समर्पण। ❒ प्रतिवर्ष मोतियाबिन्द जाँच हेतु शिविरों का आयोजन। अब तक 2000 से अधिक निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन 'तारा संस्थान, उदयपुर' सहित विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से करवाए। ❒ निर्धन युवक - युवतियों के 56 जोड़ों का पाणिग्रहण संस्कार करवाया। मानवीय और सामुदायिक सेवा के क्षेत्र में अपने विशिष्ट योगदान की लोकमान्यता के प्रतीक - स्वरूप श्री नगेन्द्र प्रसाद भार्गव को अनेक पुरस्कार, प्रशस्तियाँ, मनोनयन आदि प्राप्त हो चुके हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं - भारत सरकार द्वारा खाद्य - उत्पाद सलाहकार समिति में मनोनयन, प्रसंस्कृत खाद्य-निर्यात-प्रोत्साहन परिषद् के अध्यक्ष, कशालकर स्मृति स्वर्ण पदक पुरस्कार, तथा भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त उच्चस्तरीय गुणवत्ता परक खाद्य-उत्पाद हेतु विशिष्ट मान्यता का राष्ट्रीय पुरस्कार आदि। अनेक संगठनों, संस्थानों, प्रतिष्ठानों ने आपके ज्ञान और अनुभवों से लाभान्वित होने के उद्देश्य से आपको भाषण और परिचर्चा के लिए भी अनेक बार आमन्त्रित किया है।

श्री भार्गव सा. बहुआयामी प्रतिभा और व्यक्तित्व के धनी हैं। 'तारा' परिवार के लिए यह हर्ष और गौरव का विषय है कि आप 'तारा संस्थान' के मुख्य संरक्षक (CHIEF PATRON) हैं। आपके संरक्षण, मार्गदर्शन और संबल के सहारे 'तारा' परिवार सेवा के क्षेत्र में विशिष्ट कीर्तिमान और प्रतिमान स्थापित करने के प्रति पूरी तरह आश्वस्त है।

बुजुर्ग बन्धुओं के लिए निःशुल्क आनन्द वृद्धाश्रम

ihfM+r ekuork ds □n;&Li'khZ n`; gesa dgha Hkh] ;=&r=&loZ= ns[kus dks fey tkrs gSaA xjhch] chekjh] o`)koLFkk] larkughurk] ,dkdhiu] ifjtuksa }kjk nqO;Zogkj] ifjR;kx vkfn dbZ ,sls dkj.k gSa] ftuls O;fDr ihM+k vkSj nq%[k&nnZ dk ewfrZeku thoUr :i cu tkrk gSA vkius foiUukoLFkk esa tdM+s gq, ,sls dbZ psgjs ns[ks gksaxs] ftUgsa ns[kdj vkidh laosnu'khyrk fo"kkn esa Mwch gksxh] vkSj ftuds fy, dqN lkFkZd lgk;rk&lsok djus dh izcy Hkkouk vkids eu esa tkx`r gqbZ gksxhA ^rkjk laLFkku* us ,sls gh laosnu'khy] d#.k □n; egkuqHkkoksa dh Hkkoukvksa dks f□;kRed :i nsus ds fy, ^vkuUn o`)kJe* dk lapkyu izkjaHk fd;k gSA ^vkuUn o`)kJe* esa vHkkoxzLr] v'kDr] cslgkjk] ,dkdh o`) cU/kqvksa ds Hkkstu&oL=&fpfdRlk ns[kHkky & vkokl dh loZFkk fu%'kqYd lsok&lqfo/kk miyC/k djokbZ tk jgh gSaA

आधारभूत संरचना, प्रदत्त सुविधाएँ, उपलब्ध व्यवस्थाएँ –

● 3 cMs+] [kqys] goknkj d{k] 25 iyax] lkeku j[kus ds fy, vyekfj;k□A ● lkQ&lqFkjs xn~ns] pn~nj] rfd;s] dEcy] /kqykbZ&lQkbZ dh O;oLFkkA ● ,d cM+k Hkkstu d{k] ,d lkFk Hkkstu&uk'rs ds fy,A ● ,d cM+k cSBd d{k&Vh-oh-lksQs] dqlhZ lfgrA ● iqLrdky; @okpuky; & iqLrdsa] lekpkj & i=] if=dk,□ vkfn dh O;oLFkkA ● fpfdRld miyC/k] izfr lIrkg 'kkjhfjd tk□p] LokLF; ijh{k.k gsrqA ● izkr% pk;@nw/k] uk'rk] e/;kg~u & jkf=Hkkstu esa ,d lCth] nky] pkoy] pikrh] ngh] lk;a & pk;] fcfLdV ;k dksbZ gYdk [kk|] ekSleh Qy vkfnA ● vkuUn o`)kJe Hkou] izdk'k ;qDr] goknkj] [kqys ifjlj esa gksus ls ?kweus&fQjus] mBus&cSBus] foJke djus dh n`f"V ls loZFkk vuqdwyA

^vkuUn o`)kJe* ,d iz;kl gS & o`)tuksa dks 'kkjhfjd ,oa ekufld lq[k&larqf"V nsdj
muds thou esa [kqf'k;ksa ds iy c<+kus dk] vkSj rdyhQksa ds vglkl dks de djus dkA

-: पात्रता :-

^vkuUn o`)kJe* mu cqtqxZ cU/kqvksa ds fy, gS] tks fu/kZu] fujkJ;] ,dkdh ,oa dksbZ dke&Je djus esa v'kDr gSa] ;k tks xjhch ds dkj.k ifjokj }kjk frjLd`r] viekfur] ifjR;Dr thou th jgs gSa] vkSj ftudh ns[kHkky djus okyk dksbZ ugha gSA mi;qZDr O;oLFkkvksa vkSj lqfo/kkvksa lfgr izR;sd o`)tu ds ^vkuUn o`)kJe* esa fu%'kqYd vkokl ij rkjk laLFkku 5000 #- ekfld O;; djrk gSA

सहयोग – सौजन्य आनन्द वृद्धाश्रम सेवा (प्रति बुजुर्ग)

01 माह – 5000 रु.   03 माह – 15000 रु.   06 माह – 30000 रु.   01 वर्ष – 60000 रु.

'आनन्द वृद्धाश्रम' के आवासी विविध गतिविधियों में भाग लेते हुए अपना समय प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करते हैं।

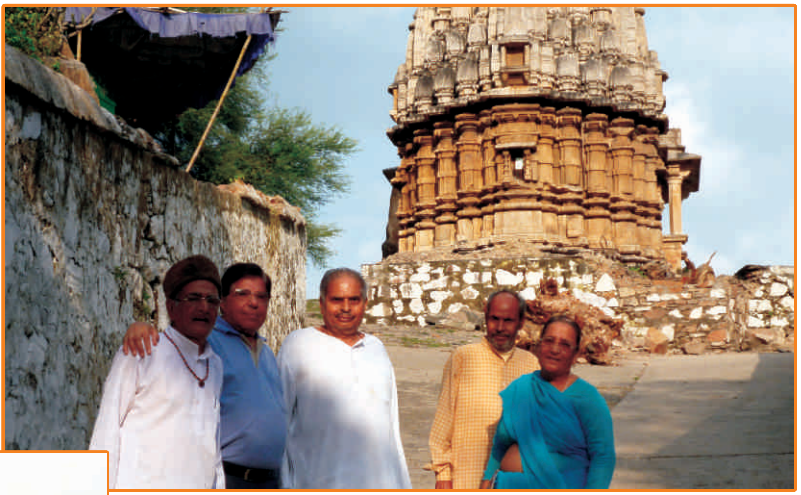

मेवाड़ क्षेत्र के आराध्य महादेव श्री एकलिंग नाथ का दर्शन और भ्रमण करते हुए

कैरम व ताश खेलते हुए

आनन्द वृद्धाश्रम से....

श्रीमती शकुन्तला शर्मा (76 वर्ष) कान्दीवली मुम्बई की निवासी हैं। परिवार में 3 पुत्रियाँ और एक पुत्र है, सभी विवाहित। विगत 35 वर्षों से समाज सेवा व सामाजिक कार्यों से जुड़ी हुई हैं। 4-5 वर्षों से नारायण सेवा संस्थान के सेवा कार्यों में सहभागिता करती रही हैं। वहाँ से 'तारा संस्थान' की जानकारी मिली। 'तारा' द्वारा संचालित 'आनन्द वृद्धाश्रम' के बारे में जानने पर अपने एकाकी जीवन को सुकून और शान्त वातावरण में व्यतीत करने की कामना से 4 माह पहले यहाँ आई हैं। 'आनन्द वृद्धाश्रम' की व्यवस्थाओं से बहुत प्रसन्न और सन्तुष्ट हैं। श्रीमती कल्पना जी गोयल द्वारा आनन्द वृद्धाश्रम के प्रत्येक आवासी की व्यक्तिगत सुख - सुविधा के प्रति लगन और निष्ठा से बहुत ही भाव विभोर हैं।

आप भी यदि किसी असहाय बुजुर्ग बन्धु के लिए 'आनन्द वृद्धाश्रम' में आवास की मानवीय सुविधा उपलब्ध करवाने की सेवा भावना रखते हैं, तो कृपया प्रति बुजुर्ग 5000 रु. प्रतिमाह की दर से अपना दान सहयोग 'तारा संस्थान' को प्रेषित करने की कृपा करें।

01 माह	-	5000 रु.
03 माह	-	15000 रु.
06 माह	-	30000 रु.
01 वर्ष	-	60000 रु.

एक कोशिश... जिन्दगी की...

दिनांक 26.09.2012 रोज की तरह तारा संस्थान में आया। गेट पर ही हमारी गाड़ी के ड्राइवर मुकेश मिले उन्होंने कहा कि - पुणे वाली आंटीजी को ले आया हूँ, पर उनकी हालत बहुत खराब है। उनका पैर कटा हुआ है और सीधा हॉस्पीटल से डिस्चार्ज कराकर आया हूँ।

यह पता था कि ''तारा'' के आनन्द वृद्धाश्रम में पुणे से एक वृद्ध महिला आने वाली है.... लेकिन उन्हें क्या तकलीफ है इसका अंदाजा नही था।

कल्पना जी, मैं और बहुत से साथी आनन्द वृद्धाश्रम पहुँचे.... वहाँ एक जर्जर काया बेड पर लेटी हुई थी। टूटे फूटे शब्दों में लड़खड़ाती जुबान में आधी हिन्दी आधी इंग्लिश में बोलते हुए उन्होनें जो सबसे पहले कहा वह यह था कि ''मैनें 15 दिन से कुछ खाया नहीं है, कुछ खाने को मिलेगा क्या'' शायद ही कोई ऐसा था जिसकी आंखे इन शब्दों से नम न हुई हों।

उन्होनें दही उपमा खाया तो एक संतुष्टी का भाव चेहरे पर था....

मैनें उनकी पुणे की डिस्चार्ज रिपोर्ट देखी जिसमें लिखा था कि वे 2 अगस्त 2012 को पुणे के अस्पताल में भर्ती हुई थी और 25 सितम्बर को मुकेश उन्हें डिस्चार्ज करा कर लाया था। उनका सीधा पैर घुटने के नीचे से गैंगरीन के कारण काटा हुआ था। उनसे बात हुई तो उन्होनें बताया कि वे अकेली हैं, विवाह नहीं किया और किसी ओटोनोमस बॉडी (Autonomus Body) में Office Assistant के रूप में काम करती थी। उन्हें यहाँ आने के लिए संस्थान के किसी साथी ने बताया था।

उनकी असली हालात पता होती तो उन्हें बुलाने की हिम्मत कर पाते या नहीं, पर जब वे यहाँ आ गई तो बस मन में यह विचार आया कि शायद भगवान उनका जीवन बचाना चाहता है, इसलिए उन्हें यहाँ भेज दिया है।

शाम में फिजिशियन को दिखाया, क्योंकि उनके कटे पैर से बहुत बदबू आ रही थी.... कहा कि इन्हें भर्ती कराना होगा।

भर्ती कहाँ कराया जाये यह भी विचार किया क्योंकि निश्चित तौर पर खर्चे की बात भी दिमाग में थी.... निर्णय हुआ कि निजी अस्पताल में ही भर्ती किया जाए.... अलग कमरा लेना पड़ा क्योंकि कटे पैर में भयानक दुर्गन्ध थी....

जांचे करवाई तो पता चला, हिमोग्लोबिन 6.4 ही है। संस्थान के भाईयों ने खून दिया।

ऑपरेशन थियेटर में उनका पैर देखा तो बताया कि घाव में पस भर गया है और पैर सड़ने लगा था। दो बोतल खून और दिया गया....

जीवन की संभावना पर डॉक्टर सा. ने यही कहा कि हम अपना (Best) कर रहे हैं....

सुश्री राव जो कि उम्र के 60 वें पड़ाव पर है, अस्पताल में भर्ती हैं। दर्द भी अब कम है। आनन्द वृद्धाश्रम के चिमनभाई और साथी भी बराबर अस्पताल में रह रहे हैं....

एक कोशिश शैलजा जी के जीवन को बचाने की हम कर रहे हैं....

आप सब भी ईश्वर से प्रार्थना करें....

- दीपेश मित्तल

गौरी सेवा

असहाय विधवा महिलाओं को 1000 रु. मासिक नकद सहायता

निर्धन और असहाय विधवा महिलाओं को आंशिक रूप से आर्थिक स्वावलम्बन मिल सके, इस उद्देश्य से गौरी योजना संचालित की जा रही है। 'तारा संस्थान' द्वारा गौरी योजना' में चयनित विधवा महिलाओं को सहायता के रूप में प्रतिमाह 1000 रु. उनके बैंक खातों में सीधे-जमा करवाए जा रहे हैं, ताकि विकट परिस्थितियों का सामना करने के लिए कुछ पैसा उनके हाथ में रहे। यह सहयोग राशि दानदाताओं द्वारा विधवा महिलाओं की सहायतार्थ 'तारा' को उपलब्ध - करवाई जा रही है। 'गौरी सेवा' योजना में आर्थिक सहायता प्राप्त कर रही महिलाओं में से इस बार आपका परिचय पुष्पा देवी से करवा रहे हैं।

नाम : पुष्पा देवी
आयु : 36 वर्ष
पति का नाम : स्व. श्री रामलाल जी
पता : 522 ए, दक्षिणी सुन्दरवास, श्याम वाटिका गली, उदयपुर (राज.)

पुष्पा देवी के पति का निधन दुर्घटनावश गत वर्ष हो गया। परिवार की आर्थिक स्थिति पहले से ही ठीक नहीं थी, पर पति के रहते जैसे - तैसे गुजारा हो जाता था। पति के निधन के बाद तो तकलीफों का बोझ निरन्तर बढ़ ही रहा है। गुजर - बसर के लिए आय का कोई स्रोत नहीं है। परिवार में भी कोई सहायता सम्बल देने वाला नहीं। 2 बच्चों के भरण - पोषण की जिम्मेदारी और स्वयं के लिए भरपेट भोजन व्यवस्था करना अत्यन्त दुष्कर हो रहा है। रहने के लिए स्वयं का आवास भी नहीं। किराये के मकान में रह रही है। 'तारा संस्थान' द्वारा गौरी योजना में चयन के बाद प्रतिमाह मिल रही 1000 रु. नकद सहायता राशि से पुष्पा देवी की मुश्किलें कुछ कम हुई हैं।

मानवीय संवेदनाओं को आहत करने वाली असहाय विधवा महिलाओं की पीड़ाओं को कुछ कम करने के प्रयास के प्रति यदि आप भी इच्छुक हों तो, कृपया प्रति विधवा महिला 1000 रु. प्रतिमाह की दर से - 01 माह, 03 माह, 06 माह, 01 वर्ष या इससे भी अधिक अवधि के लिए अपना दान-सहयोग 'तारा संस्थान' को प्रेषित करने का अनुग्रह करें।

मोतियाबिन्द जाँच शिविर

तारा संस्थान द्वारा निर्धन वृद्ध बन्धुओं की आँखों में सामान्यत: पाये जाने वाले मोतियाबिन्द के निदान और ऑपरेशन हेतु चयन के लिए शिविर आयोजित किये जाते हैं। दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं की स्थिति अधिक ही पीड़ादायक है, क्योंकि प्रथम तो उन्हें मोतियाबिन्द-ऑपरेशन की सुविधा आसानी से उपलब्ध नहीं है एवं द्वितीय, निर्धनता उनकी चिकित्सा में बड़ा अवरोधक है। तारा संस्थान ने ऐसे निर्धन बन्धुओं की जाँच हेतु शिविर लगाने एवं चयनित मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं के शिविर स्थल के निकटवर्ती कस्बे या शहर में स्थित अधुनातन सुविधाओं से सम्पन्न नेत्र चिकित्सालयों या संस्थान के उदयपुर स्थित 'तारा नेत्रालय' में सर्वथा नि:शुल्क ऑपरेशन करवाने का कार्य प्रारंभ किया है। नि:शुल्क सुविधाओं में मोतियाबिन्द की जाँच, दवाइयाँ, लेंस, ऑपरेशन, चश्मे, रोगियों का परिवहन, भोजन तथा देखभाल आदि सम्मिलित है।

शिविर विवरण

'तारा संस्थान' द्वारा माह सितम्बर, 2012 की अवधि में आयोजित मोतियाबिन्द जाँच, चयन शिविर व ऑपरेशन का संक्षिप्त विवरण - पंजीकरण व जाँच दृश्य

करणपुर शिविर

दिनांक : 02 सितम्बर, 2012 (रविवार) स्थान : चारभुजा मन्दिर चौक, करणपुर, वल्लभनगर, उदयपुर (राज.)
सौजन्यकर्त्ता : स्व. श्री बलवन्त बीर आहूजा की पुण्य स्मृति में श्रीमती प्रीति आहूजा एवं समस्त आहूजा परिवार, निवासी - दिल्ली
कुल ओ.पी.डी. - 173, ऑपरेशन के लिए चयनित - 30
ऑपरेशन स्थल - तारा नेत्रालय, उदयपुर

बड़गाँव शिविर

दिनांक : 05 सितम्बर, 2012 (बुधवार) स्थान : पंचायत समिति भवन, बड़गाँव, उदयपुर (राज.)
सौजन्यकर्त्ता : मैसर्स रामानन्द कैदारनाथ इन्टरनेशनल, अमृतसर (पंजाब)
कुल ओ.पी.डी. - 112, ऑपरेशन के लिए चयनित - 11
ऑपरेशन स्थल - तारा नेत्रालय, उदयपुर

दरीबा शिविर

दिनांक : 06 सितम्बर, 2012 (गुरुवार) स्थान : मीरा विद्या निकेतन, जैन मन्दिर के पास, जैन उपासरा, दरीबा, रेलमगरा, राजसमन्द (राज.)
सौजन्यकर्त्ता : स्व. श्रीमती सुशीला देवी झालान की पुण्य स्मृति में श्रीमती किरण सिंघल, निवासी - दिल्ली
कुल ओ.पी.डी. - 167, ऑपरेशन के लिए चयनित - 17
ऑपरेशन स्थल - तारा नेत्रालय, उदयपुर

भटेवर शिविर

दिनांक : 09 सितम्बर, 2012 (रविवार) स्थान : राजकीय प्राथमिक विद्यालय, भटेवर, वल्लभनगर, उदयपुर (राज.)
सौजन्यकर्त्ता : श्रीमती माया देवी जी W/o श्री अशोक कुमार (मुलेचाचा) C/o श्री परमानन्द जयकिशनदास,निवासी - हापुड़ (उत्तर प्रदेश)
कुल ओ.पी.डी. - 132, ऑपरेशन के लिए चयनित - 10
ऑपरेशन स्थल - तारा नेत्रालय, उदयपुर

अमरपुरा शिविर

दिनांक : 10 सितम्बर, 2012 (सोमवार) स्थान : राजकीय प्राथमिक विद्यालय, अमरपुरा, वल्लभनगर, उदयपुर (राज.)
सौजन्यकर्त्ता : चेतराम सुखराम सामरिया चेरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद (गुज.)
कुल ओ.पी.डी. - 176, ऑपरेशन के लिए चयनित - 20
ऑपरेशन स्थल - तारा नेत्रालय, उदयपुर

जेवाणा शिविर

दिनांक : 12 सितम्बर, 2012 (बुधवार) स्थान : ग्राम पंचायत भवन, जेवाणा, मावली, उदयपुर (राज.)
सौजन्यकर्त्ता : माताजी श्रीमती कांति देवी जी, डॉ. पी.के. अग्रवाल एवं समस्त अग्रवाल परिवार, निवासी - गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)
कुल ओ.पी.डी. - 109, ऑपरेशन के लिए चयनित - 18
ऑपरेशन स्थल - तारा नेत्रालय, उदयपुर

लौदा शिविर

दिनांक : 13 सितम्बर, 2012 (गुरूवार) स्थान : राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, लौदा, सलुम्बर, उदयपुर (राज.)
स्व. श्रीमती चन्द्रावती जी - स्व. श्री बाबूलाल जी, केदारनाथ जी आलमाल की पुण्य स्मृति में आलमाल परिवार, निवासी - अहमदाबाद (गुज.)
कुल ओ.पी.डी. - 104, ऑपरेशन के लिए चयनित - 17,
ऑपरेशन स्थल - तारा नेत्रालय, उदयपुर

वाना शिविर

दिनांक : 16 सितम्बर, 2012 (रविवार) स्थान : राजकीय माध्यमिक विद्यालय, वाना, वल्लभनगर, उदयपुर (राज.)
सौजन्यकर्त्ता : स्व. श्री जगदीश जी अरोड़ा की पुण्य स्मृति में श्रीमती दर्शना जी अरोड़ा (धर्मपत्नी)
श्रीमती सुधा जी - श्री जगमोहन जी अरोड़ा (पुत्र वधू - पुत्र) एवं समस्त अरोड़ा परिवार निवासी - अमृतसर (पंजाब)
कुल ओ.पी.डी. - 162, ऑपरेशन के लिए चयनित - 11, ऑपरेशन स्थल - तारा नेत्रालय, उदयपुर

बड़ी शिविर

दिनांक : 20 सितम्बर, 2012 (गुरुवार) स्थान : राजकीय माध्यमिक विद्यालय, गाँव - बड़ी, गिर्वा, उदयपुर (राज.)
सौजन्यकर्त्ता : मैसर्स गिरीराज स्टील, नई दिल्ली
कुल ओ.पी.डी. - 180, ऑपरेशन के लिए चयनित - 14
ऑपरेशन स्थल - तारा नेत्रालय, उदयपुर

'तारा' के सेवा प्रकल्पों का कृपया टी.वी. चैनल्स पर प्रसारण देखें :-

'पारस' चैनल पर प्रसारण
अपराह्ण 3.40 से 4.00 बजे, रात्रि 9.20 से 9.40 बजे

'आस्था भजन' चैनल पर प्रसारण
प्रातः 8.40 से 9.00 बजे

नेत्र रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा के लिए 'तारा संस्थान' द्वारा आयोजित 'मोतियाबिन्द जाँच - ऑपरेशन हेतु चयन' शिविर का दृश्य

नेत्र परीक्षण, मोतियाबिन्द जाँच, ऑपरेशन हेतु चयन शिविर हेतु सहायता राशि

दानदाता द्वारा प्रायोजित स्थान पर शिविर आयोजन, शिविर के लिए प्रचार-प्रसार कार्य, शिविर में उपस्थित रोगियों का निःशुल्क नेत्र परीक्षण, मोतियाबिन्द ऑपरेशन के लिए चयन, शिविर में रोगियों को मध्याह्न भोजन। दान-दाता के नाम का शिविर विवरण सहित 'तारांशु' में उल्लेख, विवरण, फोटो दानदाता को प्रेषित किये जाएँगे।

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 21 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर (राजस्थान में) - 71,000 रु.

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 21 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर (राजस्थान से बाहर) - 1,00,000 रु.

मोतियाबिन्द जाँच एवम् चयन शिविर सौजन्य राशि - प्रति शिविर - 21,000 रु.
उदयपुर व दिल्ली के निकटस्थ क्षेत्रों में

अपने प्रियजन के जन्म दिवस, स्मृति दिवस या विशेष अवसर पर एक शिविर अवश्य करावें...

शिविर सौजन्य - श्रीमती दर्शनी देवी जैन (देवकी माता) के सौजन्य से

दिनांक 02 सितम्बर, 2012 को 'तारा संस्थान' उदयपुर द्वारा श्रीमती दर्शनी देवी जैन (देवकी माता) पत्नी श्री लाला वीर सेन जैन कागजी (मिठन लाल जैन एण्ड सन्स, चावड़ी, बाजार दिल्ली) के सौजन्य से ऋषभ विहार, जैन स्थानक दिल्ली - 92 में निःशुल्क मोतियाबिन्द जाँच - ऑपरेशन हेतु चयन शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर आचार्य श्री सुभद्र मुनिजी महाराज के आशीर्वचन से गुरुदेव मुनि श्री मायारामजी महाराज की पुण्य शताब्दी के पावन अवसर पर सम्पन्न हुआ। शिविर के मुख्य संयोजक श्री सत्य भूषण जैन, दिल्ली थे। शिविर में 211 नेत्र - रोगियों की जाँच की गई, जिनमें से 13 रोगियों का ऑपरेशन के लिए चयन किया गया। चयनित रोगियों के सन्त परमानन्द हॉस्पीटल, सिविल-लाइन्स दिल्ली में निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन करवाए गए।

शिविर आयोजन में दिल्ली के समाज सेवियों - श्री विनय जैन, मिनाषी जी जैन, श्री चिराग जैन एवं श्री सिद्धार्थ जैन का प्रशंसनीय योगदान रहा। आयोजन को सफल बनाने में श्री एस.एस. जैन सभा, ऋषभ विहार, दिल्ली के प्रधान श्री अशोक जयचन्दा, महामन्त्री श्री संजय जैन एवं कोषाध्यक्ष श्री राकेश जैन का विशेष सहयोग रहा।

शिविर आयोजन के समय मूसलाधार वर्षा के बावजूद 'तारा संस्थान' के मुख्यकार्यकारी अधिकारी श्री दीपेश मित्तल के निर्देशन में शिविर प्रभारी श्री अमित शर्मा तथा प्रचारक श्री राजेन्द्र गर्ग एवं श्री शंकर चौबीसा, श्री भंवर देवंदा ने सभी व्यवस्थाओं का सराहनीय दायित्त्व निभाया।

श्री बलवन्त बीर आहूजा की पुण्य स्मृति में शिविर

स्वर्गीय श्री बलवन्त बीर आहूजा की पुण्य स्मृति में उनके परिजनों - श्रीमती प्रीति आहूजा (धर्मपत्नी), श्रीमती नन्दिता - श्री राजीव आहूजा, श्री स्मिता - श्री रमन आहूजा (पुत्र-पुत्रवधुएँ) एवं ऐश्वर्या, रमया, आशावरी तथा समस्त आहूजा परिवार, दिल्ली ने 'तारा संस्थान' के माध्यम से दिनांक - 02 सितम्बर, 2012 (रविवार) को उदयपुर जिलान्तर्गत वल्लभनगर तहसील के गाँव - करणपुर में नेत्र रोगियों की सेवार्थ 'मोतियाबिन्द जाँच, ऑपरेशन हेतु चयन शिविर' का आयोजन करवाया। शिविर में कुल 173 नेत्र रोगियों की जाँच की गई। 30 रोगियों का मोतियाबिन्द ऑपरेशन के लिए चयन किया गया, जिनके 'तारा नेत्रालय' उदयपुर में निःशुल्क ऑपरेशन करवाए गए। शिविर प्रभारी श्री कालू लाल पटेल ने साधक श्री कैलाश प्रजापत के सहयोग से शिविर का संचालन किया।

यह स्मरणीय है कि 27 जुलाई, 1929 को जन्मे श्री बलवन्त बीर आहूजा का 26 मार्च, 2012 को निधन हुआ था। श्री आहूजा सा. जीवनभर सामाजिक कार्यों से जुड़े रहे और पीड़ित बन्धुओं की सेवा में सहयोग - सौजन्य के साथ सदैव तत्पर रहे। आपकी पुण्यस्मृति में आपके सेवा-भावी परिवार द्वारा आयोजित शिविर के अवसर पर 'तारा संस्थान' हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

अस्मिता -

श्रीमद् भगवद्गीता के आलोक में... (गतांक से आगे)

आचार्यों, भाष्यकारों, विद्वानों आदि ने गीता (श्रीमद्भगवद्गीता) को वेद - उपनिषदों का सार, तथा परम रहस्यमय ग्रन्थ माना है। गीता में 18 अध्याय हैं और प्रत्येक अध्याय के अन्त में किसी विशिष्ट योग - साधना पद्धति की ओर संकेत करते हुए यह वाक्य मिलता है - 'ऊँ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे.... योगो नाम.... अध्यायः'। अर्थात्, ब्रह्मविद्या परक योगशास्त्र में उपनिषद् रूप गीता में श्रीकृष्ण व अर्जुन के मध्य संवाद के माध्यम से.... योग नाम का.... अध्याय समाप्त हुआ। गीता में योग की कई परिभाषाएँ उपलब्ध हैं। ऐसी मान्यता है कि सभी प्रकार की बाधाओं और कष्टों (आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक आदि ताप - त्रय) का निदान और निवारण का उपाय तथा सीख (शिक्षा) गीता के उपदेशों में निहित है। विषय को सम्यक् रूप से समझने के लिए गीतोपदेश की भूमिका, परिस्थितियाँ, पृष्ठभूमि और परिदृश्य की जानकारी आवश्यक है। ऐसा कहा जाता है कि हमारे सारे व्यवहार हमारी चित्तवृत्तियों से नियन्त्रित होते हैं। मनुष्य के मन, बुद्धि, अहंकार और चेतना की वृत्तियों ही उसके सुख-दुःख रूपी वेदना का मूल कारण है। इस तथ्य के परिप्रेक्ष्य में हम यदि गीता का अध्ययन और आकलन करें, तो इसके मूल में जो घटक हैं, और जो परिदृश्य हैं, वह इस प्रकार हैं -

घटना कालचक्र के द्वापर खण्ड (द्वापर युग) की है। तत्कालीन राजवंश (कुरुवंश) के दो परिवारों - घृतराष्ट्र के पुत्रों (कौरव) एवं पाण्डु के पुत्रों (पाण्डव) - में राजसत्ता के लिए संघर्ष छिड़ा। दुर्योधन (सुयोधन) ने अपने मामा शकुनि की छलबुद्धि के प्रभाव में रहते हुए पाण्डु पुत्रों को द्यूतक्रीड़ा में पराजित करके उनकी हिस्सेदारी का राज्य भी स्वहस्तगत कर लिया, इस शर्त के साथ कि पाण्डव 12 वर्ष वनवास व एक वर्ष अज्ञातवास में रहें। पाण्डवों ने शर्त का पालन किया और लौटने पर राज्य में अपना हिस्सा माँगा। दुर्योधन ने हिस्सा देने से मना कर दिया। श्रीकृष्ण ने समझाइश के उद्देश्य से शान्ति - दूत बन कर मध्यस्थता भी की, किन्तु दुर्योधन नहीं माना तथा श्रीकृष्ण को सीधा - सपाट उत्तर दिया कि बिना युद्ध किये पाण्डवों को मैं एक तिनका भी देने को तैयार नहीं हूँ - 'तृणमपि न दास्यामि विना युद्धेन केशव।'

अब युद्ध के अलावा और कोई विकल्प नहीं रहा। पाण्डवों ने अपने मित्र राजाओं, हितैषियों रिश्तेदारों आदि को युद्ध में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया। कौरवों ने भी ऐसा ही किया। युद्ध में दोनों पक्षों की ओर से भाग लेने वाले राजाओं के नाम - वंश - राज्य आदि का शब्दार्थ की दृष्टि से विश्लेषण और पहचान करें तो प्रतीत होगा कि वर्तमान भारतीय उपमहाद्वीप के लगभग सभी भू-क्षेत्रों के राजाओं ने इस युद्ध में सहभागिता की थी। यहाँ इस तथ्य को स्मरण रखना बहुत महत्त्वपूर्ण है कि युद्ध का निर्णय लेने के बाद अपने - अपने पक्ष के राजाओं तक सन्देश - आमन्त्रण पहुँचाना, राजाओं का आपनी सैन्य - सज्जा के साथ कुरुक्षेत्र (युद्धस्थल) तक पहुँचना, युद्ध सम्बन्धी सभी सुविधाएँ - भोजन आयुध आपूर्ति सुनिश्चित करना आदि में उस समय उपलब्ध रहे यातायात के साधनों - घोड़ा, हाथी, ऊँट, रथ आदि की गति और थकान की दृष्टि से बहुत समय लगा होगा, कई दिन, सप्ताह या महीने भी। और, इस पूरी अवधि में दोनों पक्षों के सभी प्रमुख सदस्यों को यह भली-भाँति ज्ञात रहा होगा कि उन्हें किस-किस के विरुद्ध लड़ना है ?युद्ध का अर्थ क्या है ? युद्ध का परिणाम क्या होता है ? आदि। इन सभी प्रश्नों और संभावनाओं पर बुद्धिमत्ता पूर्वक निर्णय करने के बाद ही दोनों पक्षों ने युद्ध का निश्चय किया होगा। गीता का महत्त्व, गीता का सत्य, गीता की प्रासंगिकण और गीता के सन्देश - उपदेश की आज के सन्दर्भ में उपादेयता - इन सब की सार्थकता पूर्वोक्त स्मरणीय महत्त्वपूर्ण तथ्य की पृष्ठभूमि में ही निहित है। अन्यथा, गीता को सही परिप्रेक्ष्य में नहीं समझ पाने की आशंका और संभावना बनी रहेगी। अस्तु।

युद्ध का दिन आ गया। कुरुक्षेत्र में दोनों पक्षों की सेनाएँ आमने - सामने आ डटीं। सभी योद्धा शूरवीर पराक्रमी थे, पर मुख्य चरित्र दुर्योधन और अर्जुन थे। श्री कृष्ण अर्जुन के सारथि थे। अर्जुन ने श्री कृष्ण से कहा - मैं यह देख लेना चाहता हूँ कि दुर्योधन की ओर से कौन - कौन आए हैं, मुझे किन-किन से युद्ध करना है, अतः हे अच्युत (श्री कृष्ण) आप मेरे रथ को दोनों सेनाओं के मध्य में अवस्थित करें - 'सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेडच्युत' - (क्रमशः)

- डी.आर. श्रीमाली

मशीनों, उपकरणों के लिए दान-सहयोग हेतु निवेदन

'तारा संस्थान' द्वारा संचालित 'तारा नेत्रालय' का शुभारंभ 24 अक्टूबर, 2012 से दिल्ली में हो रहा है। इस नेत्रालय में रोगियों की नेत्र चिकित्सा - मोतियाबिन्द ऑपरेशन (CATARACT SURGERY) सर्वथा नि:शुल्क होगी। नेत्रालय के सफल एवं प्रभावी संचालन के लिए विविध मशीनों, उपकरणों की खरीद - प्रक्रिया चल रही है। करुणाशील दान-दाताओं निवेदन है कि वे कृपया मशीनों की आपूर्ति हेतु दान-सहयोग करें। मशीनों का विवरण व लागत मूल्य निम्नानुसार है आपके दान-सहयोग से खरीदी गई मशीनें आपके नाम व सहयोग विवरण का उल्लेख, आभार प्रदर्शन करते हुए नेत्रालय में यथा स्थान स्थापित की जाएँगी।

उपकरण का नाम	उपयोग	दान राशि रु.
Ophthalmic Microscope	ऑपरेशन के दौरान आँख के छोटे - छोटे हिस्से को बड़ा दिखाता है।	631000/-
Ophthalmic Refraction unit	मरीजों की आँखों की जाँच, चश्मे के नम्बर निकालने हेतु उपकरण।	83000/-
Slit-Lamp	आँखों के छोटे से छोटे हिस्सों के अच्छी तरह से देखने का काम करता है।	52500/-
Ophthalmic Patients unit	मरीजों के ऑपरेशन के लिए काम आता है।	61000/-
A Scan Plus	मरीजों के मोतियाबिन्द के ऑपरेशन के दौरान जो लेन्स डाले जाते हैं, उसकी पावर का नाप (Measurement) करने के काम आता है।	134000/-
Auto Refractometer	मरीजों के चश्मे के नम्बर व आँख में लगने वाले लेन्स के नम्बर निकालने के काम आता है।	375000/-
Trail set with frame	मरीजों के दृष्टि दोष को कम करने के लिए किया जाता है।	13000/-
Lenso meter	चश्मे के नम्बर देखने के लिए किया जाता है।	14000/-
Indirect Ophthalmoscope	मरीज की आँखों के पर्दे की जाँच के लिए किया है।	19000/-
Applanation tonometer	मरीजों की आँख की (IOP) (इन्ट्रा ओक्युलर प्रेशर) जाँच करने के लिए।	33500/-
Retinoscope	मरीजों के चश्मे निकालने के लिए।	32000/-
Boyle's - apparatus	मरीजों के बहोशी के दौरान उपयोग।	55000/-
Multipara monitor	ऑपरेशन के दौरान मरीजों की धड़कन, ऑक्सीजन व ब्लड प्रेसर की जाँच के काम आता है।	87000/-
Phaco Emulsifier	मरीजों के मोतियाबिन्द का ऑपरेशन छोटे से छेद के द्वारा किया जाता है, जिससे कारण अच्छे से अच्छे लेन्स आँख के अन्दर लगाये जाते है।	1000000/-

"Tara" Centre - Incharge

Shri S.N. Sharma
Mumbai (M.S.)
Cell : 09869686830

Shri Prem Kumar Mata
Banswara (Raj.)
Cell : 09414101236

Shri Prahlad Rai Singhaniya
Hyderabad (A.P.)
Cell : 09849019051

Prabha Ji Jhanwar
Amrawati
Cell : 09823066500

Shri Pawan Sureka Ji
Madhubani (Bihar)
Cell : 09430085130

Shri Vishnu Sharan Saxena
Bhopal (M.P.)
Cell : 09425050136, 08821825087

Shri Naval Kishor Ji Gupta
Faridabad (HR.)
Cell : 09873722657

Prem Swaroop Bansal
Punjab
Cell : 09352717492

Shri Kulbhushan Parashar
Birmingham (England)
Cell : (0044) 121 5320846, (0044) 7815430077

Shri Satyanarayan Agrawal
Kolkata
Cell : 09339101002

Shri Sethmal Modi
Dumka (Jharkhand)
Cell : 09308582741

Shri Karan Gupta
Jaipur (Raj.)
Cell : 09784597115

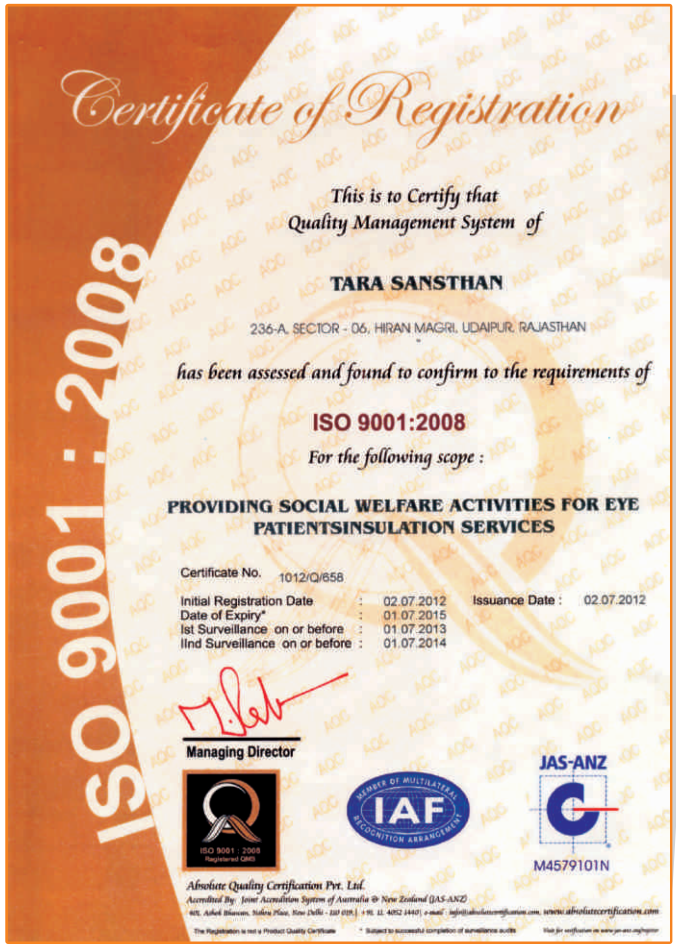

Certificate of Registration

ISO 9001 : 2008

This is to Certify that
Quality Management System of

TARA SANSTHAN

236-A, SECTOR - 06, HIRAN MAGRI, UDAIPUR, RAJASTHAN

has been assessed and found to confirm to the requirements of

ISO 9001:2008

For the following scope :

PROVIDING SOCIAL WELFARE ACTIVITIES FOR EYE PATIENTSINSULATION SERVICES

Certificate No. 1012/Q/658

Initial Registration Date : 02.07.2012
Date of Expiry* : 01.07.2015
Ist Surveillance on or before : 01.07.2013
IInd Surveillance on or before : 01.07.2014

Issuance Date : 02.07.2012

Managing Director

ISO 9001 : 2008 Registered QMS

MEMBER OF MULTILATERAL RECOGNITION ARRANGEMENT IAF

JAS-ANZ
M4579101N

Absolute Quality Certification Pvt. Ltd.
Accredited By: Joint Accreditation System of Australia & New Zealand (JAS-ANZ)
www.absolutecertification.com

ISO 9001-2008 CERTIFICATE TO TARA SANSTHAN

Tara Sansthan, has been awarded Certification of Registration for its quality management system conforming to the requirements of

ISO 9001 - 2008

in providing social welfare activities for Eye patients insulation services. Tara Sansthan expresses gratitude and congratulations to all well - wishers donors and associates for receiving this distinction.

"Tara" Contact Details - Office

Mumbai Ashram
Mahendra & Mahendra Implies Co. H. Society
Park View Builing, B - 26 IInd Floor,
Kulupawadi, Boriwali (E) Mumbai 400066
Shri Banshilal
Cell : 09699257035, 07666680094

Gurgaon Ashram
B-30, Old DLF Colony,
Sector - 14,
Gurgaon (Haryana)
Shri Kamlesh Joshi
Cell : 08285240611

Delhi Ashram
S-17, Parampuri, Ground Floor,
Near Shri Shwetamber Jain Sthanak,
Uttam Nagar, Delhi 110056
Shri Amit Sharma,
Cell : 09999071302, 09971332943

Surat Ashram
295, Chandralok Society,
Parwat Gaon,
Surat (Guj.)
Shri Prakash Acharya
Cell : 09829906319

NAME AND PLACE OF THE DONORS, WE ARE GRATEFUL TO THEM

Donors are requested kindly to send their photographs alongwith Donation for publishing in TARANSHU

Mr. A.K. Rathi & Mrs. Pushpa Devi
Andhra Pradesh

Mr. Jhan Chand & Mrs. Sudharani Gupta
Agra

Mr. Sanjay & Mrs. Rani Gosavi
Chikali, Puna

Mr. Padam Prakash &
Mrs. Chand Prabha Mishra, Kanpur

Mr. K.K. Purwar & Mrs. Madhuri Purwar
Allahabad (UP)

Mr. Surendra K. Agrawal & Wife

Mr. D.D. Mathur & Mrs. Pushpa Mathur
Panchakula

Mr. M.G. & Mrs. Sahu Kushum Kashikar
Nagpur (MH)

Mr. Naresh Garg & Mrs. Rani Garg
Chandigarh

Mr. Gulshan K. & Mrs. Rajrani Batara
Ambala City

Mr. Sudhir K. & Mrs. Snehalata Gupta
Agra

Mr. Ramesh Chandra & Mrs. Maya Devi Mittal
Surat

Mr. Ankush Gupta
Agra

Mr. Sohan Lal Prajapat
Sikar

Mr. Suresh Chandra Gupta
Agra

Mrs. Rukmini L. Chauhan
Karnataka

Mr. O.P. Awasthi
Kanpur

Mrs. Mala Bhoumik
Agra

Mr. Vasudev Bhoumik
Agra

Mr. Uma Shankar Bharawdaj
Agra

Mr. Indra Dev
Buland Shahar

Mrs. Bharati Ben Shukla
Baroda

Mr. Ashish Shivhare
Agra

Mr. Anil Kumar Mathur
Agra

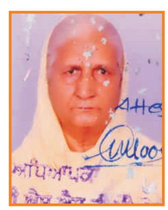
Mrs. Santosh Rani
Ropad (Punjab)

Abhishek Gurumeet Singh
Chandigarh

INCOME TAX EXEMPTION

Donations to Tara Sansthan are TAX-EXEMPT under section 80G (50%) and 35 AC (100%) of IT Act. 1961

Tara Sansthan Bank Account

ICICI Bank A/c No. 004501021965
SBI A/c No. 31840870750
HDFC A/c No. 12731450000426
Axis Bank A/c No. 912010025408491

EVENTS AND OCCASIONS

Dr. Kailash "Manav" Founder and Managing Trustee of Narayan Sewa Sansthan (Trust), Udaipur said that service to suffering humanity is living Religion. He was addresing the immates of Anand Vriddhashram on September 15, 2012. His daughter Smt. Kalpana Goyal (Founder and President) apprised him of humanitarian service endeavors being carried out by Tara Sansthan.

Guests on the accasission of Cataract Delection Camp organized byTara Sansthan on September 02, 2012 at Delhi - Shri Satya Bhushan Jain, Chief Convenor of the camp (Extreme right) and
Shri Deepesh Mittal, C.E.O.
Tara Sansthan welcomed the guests.

Tara Sansthan received guests from Kanpur on October 01, 2012 (From right) - Veena Ji, Pratibha Ji, Gaurav Ji, Rajkumar Ji, Smt. Kalpana Goyal (President and Founder of Tara), Umaji, Monu Ji and Shri Deepeh Mittal, C.E.O. Tara.

तारांशु (हिन्दी - अंग्रेजी) मासिक समाचार पत्र, अक्टूबर, 2012
RNI. No. - RAJBIL/2011/42978, Postal Reg. No. - RJ/UD/29-102/2012-2014, Dates of Posting - 11th to 18th each month at Udaipur H.O.
'तारांशु' - स्वत्वाधिकारी, श्रीमती कल्पना गोयल द्वारा 240-ए, हिरण मगरी, सेक्टर - 6, उदयपुर, राजस्थान से प्रकाशित तथा मुद्रक श्री विजय अरोड़ा द्वारा न्यूट्रेक ऑफसेट मुद्रणालय, 13, न्यूट्रेक नगर, सेक्टर - 3, हिरण मगरी, उदयपुर में मुद्रित, सम्पादक - श्रीमती कल्पना गोयल

तारा संस्थान के नि:शुल्क मानवीय सेवा प्रकल्प, आपसे प्रार्थित अपेक्षित सहयोग -सौजन्य राशि

नेत्र चिकित्सा सेवा (मोतियाबिन्द ऑपरेशन)

01 ऑपरेशन - 3000 रु., 03 ऑपरेशन - 9000 रु., 06 ऑपरेशन - 18000 रु., 09 ऑपरेशन - 27000 रु., 17 ऑपरेशन - 51000 रु.
मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 21 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर (राजस्थान में) - 71000 रु.
मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 21 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर (राजस्थान से बाहर) - 100000 रु.
चश्मा जाँच - चश्मा वितरण - दवाई सहयोग राशि, प्रतिशिविर - 21000 रु.

तृप्ति योजना सेवा (प्रति बुजुर्ग खाद्य सामग्री सहायता)	गौरी योजना सेवा (प्रति विधवा महिला सहायता)	आनन्द वृद्धाश्रम सेवा (प्रतिबुजुर्ग)
01 माह - 1500 रु.	01 माह - 1000 रु.	01 माह - 5000 रु.
06 माह - 9000 रु.	06 माह - 6000 रु.	06 माह - 30000 रु.
01 वर्ष - 18000 रु.	01 वर्ष - 12000 रु.	01 वर्ष - 60000 रु.

सहयोग राशि - आजीवन संरक्षक 21000 रु., आजीवन सदस्य 11000 रु. (संचितनिधि में)

आयकर में छूट : तारा संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G (50%) व 35AC (100%) के अन्तर्गत आयकर में छूट योग्य मान्य है।

निवेदन : कृपया अपना दान - सहयोग नकद या 'तारा संस्थान, उदयपुर' के पक्ष में देय चैक/ड्राफ्ट द्वारा संस्थान के पते पर प्रेषित करने का कष्ट करें, **अथवा :** अपना दान सहयोग तारा संस्थान के निम्नांकित किसी बैंक खाते में जमा करवा कर 'पे-इन-स्लिप' अपने पते सहित संस्थान को प्रेषित करें ताकि दान - सहयोग प्राप्ति रसीद आपको तत्काल भेजी जा सके।

ICICI Bank A/c No. 004501021965	IFS Code : icic0000045	Axis Bank A/c No. 912010025408491	IFS Code : utib0000097
SBI A/c No. 31840870750	IFS Code : sbin0011406	HDFC A/c No. 12731450000426	IFS Code : hdfc0001273

Pan Card No. Tara - AABTT8858J

'तारा' के सेवा प्रकल्पों का कृपया टी.वी. चैनल्स पर प्रसारण देखें :-

'पारस' चैनल पर प्रसारण
अपराह्ण 3.40 से 4.00 बजे,
रात्रि 9.20 से 9.40 बजे

'आस्था भजन' चैनल पर प्रसारण
प्रात: 8.40 से 9.00 बजे

बुक पोस्ट

Tara
ज्योतिर्मय जीवन
तारा संस्थान
डीडवाणिया (रतनलाल) नि:शक्तजन सेवा सदन
236, सेक्टर - 6, हिरण मगरी,
उदयपुर (राज.) 313002
मो. +91 9549399993, +91 9649399993
Email : tarasociety@gmail.com, tara_sansthan@rediffmail.com
Website : www.tarasociety.org